The Banyan Tree Journal
(An Open Access Peer-reviewed Multidisciplinary Journal)
ISSN:
No. 1, June 2025 : 27-35

पर्यावरण दर्शन में फ्रिटजॉफ कैप्रा के गहन पारिस्थितिकीय दर्शन के विशेष सन्दर्भ में

डॉ. अतुल कुमार तिवारी, डॉ. दिव्या पाण्डेय एवं अमित पाण्डेय*

सारांश

पर्यावरण के वर्तमान परिदृश्य को देखकर अथवा महसूस करके और न चाहकर भी मन में प्रश्न उठ ही जाता है कि विकास तो हो रहा है, परन्तु क्या हम पर्यावरण में मानवहित, समाजहित, स्वास्थ्यहित व प्रकृतिहित को ध्यान में रखकर संतुलन बना पा रहें है? तत्पश्चात् पर्यावरण को व विकास प्रक्रिया को देखकर स्वतः ही हमें उत्तर प्राप्त हो जाता है कि हम विकास गति को तो प्राथमिकता दे रहे हैं, परन्तु पर्यावरण के संतुलन को संतुलित नहीं कर पा रहे हैं। इसी क्रम में हमारे वैश्विक इतिहास में कई ऐसे विचारक हुए हैं जिन्होंने इस पर्यावरणीय समस्या के समाधान हेतु अपने चिंतनरूपी विचार द्वारा इस के निदान में अपने विचार समाज के सामने प्रस्तुत किये। जिस क्रम में एक वैचारिक पद्धति आविस्कृत हुई, जिसका नाम है 'पारिस्थितिकी नैतिक दर्शन'। हांलाकि इसका जन्म तकनीक से हुआ, जिसका पर्यावरणीय समस्या के समाधान में प्रयोग किया जाता था या किया जाता है। तकनीक ने पर्यावरण को अत्यधिक प्रभावित किया है, परन्तु तकनीक से पर्यावरण को सन्तुलित भी किये जाने का प्रयास होता रहा, लेकिन जितनी आवश्यकता पर्यावरण को सन्तुलित करने की है उतनी संतुलित न हो पाने के कारण ही यह समस्या उभर कर आज हमारे सामने है। इस समस्या के समाधान में पारिस्थितिकी नैतिक दर्शन का प्रयोग तकनीक को नियन्त्रित करना है। पारिस्थितिकी एक विज्ञान ही है और कुछ नहीं। प्रश्न बनता है कि क्या यह विज्ञान नीतिशास्त्र के बिना सम्भव है? इस प्रश्न का उत्तर है, 'गहन पारिस्थितिकी दर्शन', जिसने समकालीन पर्यावरणीय सम्बधी विचारों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। उन्होने इसको दर्शन के अलावा सामाजिक आन्दोलन भी कहा है। उन्होंने बताया कि प्रकृति प्रदत्त सृष्टि जटिल अंतर्संबंधों का एक सूक्ष्म सन्तुलन है जिसमें एक जीव का अस्तित्व पारिस्थितिकी तंत्र के भीतर दूसरों के अस्तित्व पर निर्भर है। हमने अपने सम्पूर्ण शोध कार्य में पर्यावरण सम्बन्धी समस्याओं के समाधान में जो प्रयास (सामजिक, पारम्परिक, वैदिक, वैज्ञानिक

* शोध छात्र, दर्शनशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज. Email: tiwariatulanjha@gmail.com, s.amitpandey1115@gmail.com

व नैतिक) विभिन्न पद्धतियों अथवा तकनीकों द्वारा की जा रही हैं उनमें हमने कैप्रा के गहन पारिस्थिकी दर्शन, जो नैतिक दर्शन से सम्बद्ध है उसके द्वारा उपरोक्त समस्या को समाप्त अथवा कम करने का प्रयास किया है, क्योकि हमें ऐसा प्रतीत होता है कि विभिन्न पद्धतियों के साथ ही साथ इस पद्धति द्वारा पर्यावरणीय समस्याओं को दूर करने में कैप्रा के विचारों की अहम भूमिका का योगदान सार्थक हो सकता है।

मुख्य शब्दः गहन पारिस्थितिकी, पारिस्थितिकीय चेतना, समग्रता, परस्पर जुड़ाव, पर्यावरणीय स्थिरता ।

परिचय

पर्यावरण दर्शन, दर्शनशास्त्र की एक शाखा है जो प्रकृति और पर्यावरण के साथ मानव सम्बधों के नैतिक, आध्यात्मिक और ज्ञानमीमांसीय पहलुओं की जांच करती है। गहन पारिस्थितिकी जीवन के नवीन मूल्यों और नैतिकता से सम्बधित है। इसमें जीवनादर्श में परिवर्तन के साथ ही साथ न केवल हमारे अवबोध (Perception) में विस्तार होता है, वरन् चिन्तन के तरीके तथा मूल्यों का भी विस्तार होता है। जहाँ तक चिन्तन के तरीकों में परिवर्तन की बात है, गहन पारिस्थितिकी के जीवनादर्श में विश्लेषणात्मक चिन्तन की जगह संश्लेषणात्मक चिन्तन को महत्व दिया जाता है। रिडक्शनिस्ट चिन्तन की जगह 'पूर्ण' के रूप में देखने और सोचने का काम करते है। इसी तरह एक रेखीय चिन्तन के तरीके के स्थान पर चक्रीय रूप में वस्तु के विकास के प्रक्रिया का चिन्तन करना आवश्यक हो जाता है। जहाँ तक मूल्यों का सम्बन्ध है वहाँ विस्तार की जगह संरक्षण के मूल्य को महत्व दिया जाता है। प्रतिस्पर्धा की जगह सहयोग के मूल्य को महत्व दिया जाता है। संख्यात्मक के स्थान पर गुणात्मक और प्रभुत्व के स्थान पर सहभागिता के मूल्य को स्वीकारा जाता है। यही है 'गहन पारिस्थितिकी दर्शन में चिन्तन और मूल्यों का परिवर्तन।' यह प्राकृतिक दुनिया के साथ हमारे सम्बधों और इसके सन्दर्भ में हमारी नैतिक जिम्मेदारियों को समझने का प्रयास करती है।

पर्यावरण दर्शन के प्रमुख चिंतकों में से एक फ्रिटजॉफ कैप्रा है, जिनके गहन पारिस्थितिकी के दर्शन ने समकालीन पर्यावरण विचार को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है। फ्रिटजॉफ कैप्रा, जिनका जन्म 1939 में ऑस्ट्रिया में हुआ था, वह एक भौतिक विज्ञानी सिस्टम सिद्धान्तकारी और लेखक है। वह अपने अंत: विषय कार्य के लिए जाने जाते है, विशेष रूप से सिस्टम सिद्धान्त और पारिस्थितिकी के क्षेत्र में। कैप्रा के मौलिक कार्य, "द ताओ ऑफ फिजिक्स" (1975) ने आधुनिक भौतिकी और पूर्वी रहस्यवाद के बीच समानता का पता लगाया, जिससे पारिस्थितिक सोच में उनके बाद के अन्वेषणों की नींव रखी गई।

फ्रिटजॉफ कैप्रा का गहन पारिस्थितिकी का दर्शन, पर्यावरण दर्शन के भीतर एक परिप्रेक्ष्य है जो प्रकृति के समग्र और परस्पर जुड़े दृस्टिकोण पर जोर देता है। गहरी पारिस्थितिकी सभी जीवित

प्राणियों और पारिस्थितिक तंत्रों को आन्तरिक रूप से मूल्यवान मानते हुए मानव केन्द्रितावाद से आगे निकल जाती है। कैप्रा के विचार, जैसा कि उनकी पुस्तक "द वेब ऑफ लाइफ" में व्यक्त किया गया है, जीवमण्डल में सभी तत्वों के अंतर्संबंधों और परस्पर निर्भरता को पहचानने के महत्व पर जोर देते हैं। गहन पारिस्थितिकी पृथ्वी के साथ अधिक टिकाऊ और सामजस्यपूर्ण सम्बधों की ओर मानव चेतना में बदलाव को बढ़ावा देती है। यह जैव विविधता और प्राकृतिक प्रक्रियाओं के प्रति गहरा सम्मान को प्रोत्सहित करता है, यह ऐसी नैतिकता की वकालत करता है जो मानवीय हितो से परे हो। गहरी पारिस्थितिकी से प्रभावित कैप्रा की इको-एथिक्स मनुष्यों और पर्यावरण के बीच सामंजस्य को बढ़ावा देने के इर्द-गिर्द घूमती है। फ्रिटजॉफ कैप्रा का गहन पारिस्थितिकी का दर्शन विश्व के सम्बन्ध में एक समग्र दृष्टिकोण की बात करता है और मानव चेतना में गहन बदलाव का आहवान करता हैं। यह शोध पत्र कैप्रा की गहन पारिस्थितिकी दर्शन के

प्रमुख सिद्धांतों और पर्यावरणीय नैतिकता एवं टिकाऊ जीवन के लिए इसके निहितार्थ की गहन जांच प्रदान करता है। इस दर्शन का उद्देश्य जिम्मेदारी और अंतर्संबंध की भावना को प्रेरित करना, पारिस्थितिकी जागरूकता की गहरी भावना और पर्यावरणीय स्थिरता के प्रति प्रतिबद्धता को बढ़ावा देना है।

(1)

कैप्रा का गहन पारिस्थितिकी दर्शन, कई मायनों में प्रभावशाली और व्यावहारिक होने के बावजूद भी इसे कई कारणों से पर्यावरण दर्शन में समस्या का सामना करना पड़ा है। कैप्रा के गहन पारिस्थितिकी दर्शन में अभी भी 'मानव केन्द्रितावाद' के निशान बरकरार है, जिसका अर्थ है कि यह मानवीय हितों और चिंताओं को पर्यावरणीय नैतिकता के केन्द्र में रखता है।

गहन पारिस्थितिकी का उदेश्य मनुष्यों से परे नैतिक विचार का विस्तार करना है। आध्यात्मिकता और रहस्यवाद पर कैप्रा का जोर कुछ पर्यावरण दार्शनिकों के लिए समस्याग्रस्त के रूप में देखा जा सकता है जो पर्यावरणीय मुद्दों पर अधिक वैज्ञानिक रूप से आधारित दृष्टिकोण की वकालत करते हैं। उनका जो तर्क है कि आध्यात्मिक और रहस्यमय तत्व पर्यावरणीय नैतिकता के लिए मजबूत आधार प्रदान नहीं कर सकते हैं, व्यावहारिक निहितार्थों पर भी सवाल उठाते हैं। हांलाकि यह मानव व्यवहार और विश्वदृष्टि में महत्वपूर्ण बदलाव की वकालत करते हैं। यह विशिष्ट पर्यावरणीय समस्याओं का समाधान करने या नीतिगत बदलावों को लागू करने के बारे में स्पष्ट और व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान नहीं करता है। जगंल और प्राचीन प्रकृति पर गहन पारिस्थितिकी दर्शन हाशिए पर रहने वाले समुदाय, स्वदेशी लोगों और शहरी वातावरण की जरूरतों और चिन्ताओं को नजरांदाज कर सकता है। यह पर्यावरणीय न्याय के मुद्दों को पर्याप्त रूप से सम्बंधित करने में विफल हो सकता है। इन समस्याओं के बावजूद, कैप्रा के गहन पारिस्थितिकी दर्शन ने समकालीन पर्यावरणीय विचार को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और कई लोगों को

प्रकृति और पर्यावरण के साथ अपने सम्बंधों पर पुनर्विचार करने के लिए प्रेरित किया है। अतः इस पर्यावरण दर्शन पर व्यापक चर्चा में इसकी सीमाओं को सम्बोधित करना आवश्यक है।

(2)

भौतिक विज्ञानी से दार्शनिक बने फ्रिटजॉफ कैप्रा ने हमारे ग्रह के सामने आने वाली पर्यावरणीय चुनौतियों की प्रतिक्रिया के रूप में गहन पारिस्थितकी के अपने दर्शन को पेश किया। गहरी पारिस्थितिकी, उथले मानवकेन्द्रित दृष्टिकोण से परे जाती है, जो सभी जीवन रूपों और पारिस्थितिकी तन्त्रों के अंतर्संबंधों की गहन समझ का आग्रह करती है।

नैतिकता की दृष्टि से गहन पारिस्थितिकी में नैतिक मूल्य का महत्व व्यापक रूप से स्वीकार करने योग्य है। उदाहरण के लिए, जहाँ पुराने जीवनादर्श मानव केन्द्रित मूल्यों पर आधारित था, वही नया जीवन का आदर्श गहन पारिस्थितिकी केन्द्र अथवा पृथ्वी केन्द्रित मूल्यों पर आधारित है। यह एक विश्व दृष्टि है, जिसमें समग्र पृथ्वी अथवा विश्व आता है और महत्व देता है। सभी जीवित प्राणी गहन पारिस्थितिकी समुदाय के सदस्य के रूप में एक साथ बँधे और परस्पर निर्भर है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जब इस गहन पारिस्थितिकी का अवबोध हमारे दिन-प्रतिदिन के जीवन की अवचेतना में आ जाएगा, तब नयी नैतिकता का उदभव होगा और यही नैतिकता 'पारिस्थितिकी नैतिकता' होगी। यह सभी जीवन के रूपों की अंतरसंयोजनात्मकता और अन्योन्याश्रयता को पहचानती है। यह उन रिश्तों के जाल पर जोर देता है जो पृथ्वी पर जीवन को कायम रखते हैं। मनुष्य को अन्य प्रजातियों से श्रेष्ठ और पृथ्वी समुदाय के समान सदस्य माना गया है, क्योंकि केवल मनुष्य ही जीवित प्राणियों में ऐसा बुद्धिमान प्राणी है, जिसके ऊपर पर्यावरण की सुरक्षा और साथ ही प्राकृतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक विकास की संपोस्यता की देखभाल का उत्तरदायित्व थोपा जा जाता है और यहीं से मनुष्य का नैतिक कर्तव्य प्रारम्भ हो जाता है कि वह पर्यावरण की सुरक्षा करे।

गहन पारिस्थितिकी यह सुझाव देती है कि मनुष्य पारिस्थितिक चेतना के माध्यम से पूर्णता और आत्मबोध प्राप्त कर सकता है और इसका आधार और कुछ नहीं, बल्कि 'आध्यात्मिक' है। इस आध्यात्मिक आधार का कारण यह अनुभव है कि "प्रकृति और 'स्व' (या आत्मा) एक ही है। प्रकृति को आत्मा के रूप में देखने का अर्थ है- 'आत्मा का विस्तार' और प्रकृति में तादात्म्य सम्बन्ध ही गहन पारिस्थितिकी का आधार है। नॉर्वे के दार्शनिक अर्ने नेस ने प्रकृति और आत्मा की एकाकारता पर जोर देते हुए कहा है कि "आत्मा के विस्तार और गहराई से प्रकृति की सुरक्षा की चिन्ता का भी विस्तार हो जाता है। ऐसी स्थिति में प्रकृति की सुरक्षा का अर्थ हुआ अपनी ही सुरक्षा करना।" जिस प्रकार हम श्वास लेने में किसी नैतिक दबाव का अनुभव नहीं करते और स्वाभाविक रूप से श्वास लेते हैं, उसी प्रकार यदि हम अपनी आत्मा या स्वयं का विस्तार कर लें, अर्थात् आत्मविस्तार की अवस्था में अन्य प्राणियों को अपने में समेट ले तो उनकी सुरक्षा के लिए किसी नैतिक उपदेश की आवश्यकता

नहीं रहेगी। हम बिना किसी दबाव या नैतिक दबाव के ही अपने से ही प्रकृति की सुरक्षा करेंगे। यदि पारिस्थितिकीय आत्मा द्वारा इस सत्य का अनुभव (आत्मा और प्रकृति एक है) हो जाए तो स्वाभाविक तथा सुन्दरता से हमारा व्यवहार कठोर पर्यावरणवादी नैतिकता का पालन कर सकता है। यह व्यक्तिगत हितों से परे है और सम्पूर्ण पृथ्वी की भलाई को गले लगाता है।

वर्तमान समय में इस प्रकार की गहन पारिस्थितिकी नैतिकता की आज बहुत आवश्यकता है, क्योकि इसके अभाव में वर्तमान में अधिकतर वैज्ञानिक जो कर रहे हैं उससे न तो जीवन आगे की ओर बढ़ रहा है और न ही जीवन की सुरक्षा या संरक्षण ही सम्भव है, बल्कि इसके विपरीत कार्यों से जीवन का विनाश ही हो रहा है। जैसे भौतिक शास्त्री ऐसे हथियारों का निर्माण करते हैं जिससे पृथ्वी से जीवन समाप्त हो जाने का भय और आंतक हमेशा बना रहता है।

रसायनशास्त्री ऐसे रसायनों और गैसों, केमिकल्स का प्रयोग करते हैं जिससे सम्पूर्ण विश्व का पर्यावरण दूषित हो रहा है। जीव वैज्ञानिक ऐसे नए-नए और अज्ञात सूक्ष्य जीवों को मुक्त रह रहे हैं, जो लोगों के जीवन के लिए खतरनाक सिद्ध होते हैं और इसी प्रकार मनोविज्ञानवेत्ता तथा अन्य वैज्ञानिक भी विज्ञान की प्रगति के नाम पर अनेक पशुओं और प्रकृति की हत्या करते हैं या उन्हें पीड़ा पहुँचाते हैं। अतः ऐसी क्रियाओं के चलते यह आवश्यक है कि विज्ञान के क्षेत्र में 'पारिस्थितिकी नैतिकता' का प्रवेश कराया जाए। इसी प्रकार यदि देखा जाय तो वर्तमान समय में दर्शन की आवश्यकता अपेक्षाकृत पहले से इस समय अधिक है। पारिस्थितिकी और तकनीकी इस वर्तमान समय की प्रमुख देन हैं और इनके लिए नैतिकता की अत्यधिक आवश्यकता है। इनके लिए एक ऐसे नैतिक दर्शन की आवश्कता है जो मनुष्यों द्वारा अपनाये गये तकनीकों को सही दिशा प्रदान कर सके और उसकी सोच को मानववादी बना सके। इस दृष्टि से नैतिक दर्शन में गहन पारिस्थितिकी का दृष्टिकोण महत्वपूर्ण बन गया है। गहन पारिस्थितिकी, पारिस्थितिकी का वह भाग है जो समस्त जीवित प्राणियों के आन्तरिक मूल्यों को महत्व देता है और मनुष्य को जीवन के ताने-बाने का एक विशेष किनारा मानता है। वस्तुतः यह एक आध्यात्मिक अवधारणा है। यह नवीन मूल्यों और नैतिकता से सम्बधित है। इसमें प्राकृतिक नियमों के अनुसार, विकास करने पर बल दिया जाता है यह कहा जा सकता है कि गहन पारिस्थितिकी में मानव, समाज व प्रकृति के अंतर्संबंधों को निरूपित किया जाता है।

(3)

अनेक पाश्चात्य पारिस्थितिकीविदों, समाजशास्त्रियों तथा दार्शनिकों ने यह दावा किया है कि उन्होंने परम्परागत नीतिशास्त्र से भेद करते हुए मौलिक रूप से एक नए 'नीतिशास्त्र' की रचना की है। परम्परागत नीतिशास्त्र में तो नीतिशास्त्र से भेद करते हुए मौलिक रूप से एक शास्त्र की रचना की है। परम्परागत नीतिशास्त्र में तो नीतिशास्त्र का सम्बन्ध मनुष्य तथा मनुष्य के बीच और मनुष्य तथा समाज के बीच देखा जाता है, परन्तु इससे भिन्न एक नयी नैतिकता की बात इन चिन्तकों ने की है

जिसको 'पारिस्थितिकीय नैतिकता' तथा एक 'नव मानववाद' की संज्ञा दी गयी है। इसमें मनुष्य केन्द्र से ही गायब है और जीवित तथा यहाँ तक कि अजीवित पदार्थ नीतिशास्त्र के विषय बनते है। रोम के क्लब के प्रेसिडेन्ट पेस्सी तथा फ्रांस के समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री और पारिस्थितिकीविद् सेन्ट मार्क ने नव मानववाद की बात की है और इसका काम 'प्रकृति का समाजीकरण' करना बताया है। समाज का 'सामाजिक स्थान्तारण' करना ही इसका प्रमुख लक्ष्य है। कहते है कि यही एक मात्र ऐसा उपाय है जिसके द्वारा पृथ्वी पर जीवन की रक्षा हो सकती है।

कैप्रा का दर्शन पृथ्वी के जिम्मेदार प्रबंधन की वकालत करता है। इसमें पर्यावरण पर मानवीय गतिविधियों के प्रभाव को पहचानना और स्थिरता और पारिस्थितिकी सन्तुलन को बढ़ावा देने वाली प्रथाओं को अपनाना शामिल है। भारतीय संस्कृति में तो प्रकृति की जीवन्तता को इस सीमा तक स्वीकार किया गया है कि मनुष्य को प्रकृति से पूर्णतया अलग कर देने की न कोई जगह है और न ही समय। सर्वात्मवाद में स्थान और समय का लोप नहीं हैं। सदैव और सर्वत्र चैतन्य व्याप्त है और सम्पूर्ण प्रकृति चेतना से परिपूर्ण है। यदि मनुष्य अधिक चेतन प्राणी है तो उसमें कर्तव्य, नैतिक और अनैतिक को जाँचने की विवेक शक्ति भी अधिक है। भारतीय धर्मशास्त्रों में मनुष्य के उन कर्त्तव्यों की ओर संकेत किया गया है, जो सम्पूर्ण जीवित पदार्थों पशु-पक्षी, लता-वृक्ष तथा जल-थल, आकाश-वायु, सूर्य-चन्द्रमा, सरिता-समुद्र आदि के प्रति निर्धारित किए गये हैं।

मनुष्य का कर्त्तव्य होना चाहिए कि वह प्रकृति से बिना आज्ञा लिए कुछ न ले। लूट-खसोट अर्थात मनमाना, बिना प्रकृति की सुरक्षा का ध्यान किये, प्रकृति से न ले। अनेक पारिस्थितिकी ने पर्यावरणीय न्याय, संरक्षण और सतत् विकास की वकालत करने वाले जमीनी स्तर के आन्दोलनों को प्रभावित किया है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जो मानव कल्याण और प्राकृतिक पर्यावरण के बीच सम्बधों का पता लगाता है, क्योंकि नैतिकता का सम्बन्ध पाप-पुण्य से जुड़ा है, अर्थात् नैतिक कार्य पुण्य प्रदान करता है और अनैतिक कार्य पाप प्रदान करता है। "पेड़-पौधे पुण्यार्जन के लिए मनुष्य-शरीर में आते है।"[1] अतः सिद्ध है कि "प्राण-चेतना वृक्षों और वनस्पतियों में भी है, इसलिए उनके साथ भी प्राणियों जैसा अध्यात्मवादी दृष्टिकोण अपनाकर हमें व्यवहार करना चाहिए। हमारे शास्त्रों में भी वृक्षों को लगाने, उनका पोषण करने को एक पुण्य कर्म माना गया है और उसी प्रकार उन्हें काटना और बढ़ने न देना भी शास्त्रों में इसे पाप कहा गया है। वृक्ष हमें प्राण वायु, जीवन-तत्व, हरीतिमा, छाया, लकड़ी, पुष्प, फल आदि बहुत कुछ देते हैं। ऐसे उपकारी प्राणियों से, वृक्षों से, हमें बहुत कुछ सीखना चाहिए और उनके जैसा परोपकारी बनना चाहिए। पुनः वृक्ष, वनस्पति, जड़ नहीं, वरन् प्राणियों की तरह उनमें भी चेतन संवेदनशीलता है, इसलिए उनके साथ जड़ जैसा बर्ताव करना पाप या अनुचित कर्म है।"

प्रकृति में जीवन्तता के कारण अथवा मनुष्य जैसी अनुभूति और संवेदना पूर्ण होने के कारण उनके प्रति मनुष्य के नैतिक कर्त्तव्यों को निर्धारित किया गया है। सबसे प्रमुख नैतिक कर्तव्य है, प्रकृति

की वस्तुओं की पूजा। भारतीय संस्कृति में वृक्ष, नदियों, पर्वतों, सूर्य, चन्द्र आदि की पूजा देव रूप में की जाती है। उनके प्रति आदर, श्रद्धा प्रकट करना मनुष्य का नैतिक कर्त्तव्य माना गया है। कहा जाता है कि "गंगा जी में स्नान करने के पहले प्रणाम करके शीश पर जल-स्पर्श नहीं करना चाहिए। तालाब या जलाशय तथा सरिता के किनारें मल-मूत्र विसर्जन न करें, अर्थात् जल को प्रदूषित न करें।"[2] यह हमारे लिए नैतिक कर्तव्य के रूप में सुझाया गया है। वृक्षारोपण करना हमारा नैतिक और धार्मिक कर्तव्य माना गया है। इसी प्रकार तालाब, बावड़ी खुदवाना कर्तव्य माना गया है। 'मत्स्य पुराण' में कहा गया है,

"दश कूप-समावापी, दशवापी-समोह्नदः
दश ह्रद-समः पुत्रों, दश-पुत्र समोहुमः।।"[3]

भारतीय संस्कृति में इतनी ऊँची नैतिकता और धार्मिकता के होते हुए भी वृक्षों का कटान तथा सरिताओं का प्रदूषण जारी है । इसका कारण औद्योगिक विकास से उत्पन्न उपभोक्तावादी संस्कृति है। यह पाश्चात्य परम्परा के स्वार्थवादी प्रवृत्ति का परिणाम है। इस बुराई का सार्वभौमिकरण हो चुका है और यह एक विश्व की समस्या बन चुकी है, यदि इसका निदान ढूँढा जा सकता है, तो भारतीय परम्परा द्वारा ही इसका उपाय बताया जा सकता है। प्रकृति के प्रति जो भी धार्मिक एवं नैतिक कर्त्तव्य बताए गये हैं, उसका आधार पाश्चात्य की तरह उपयोगितावादी न होकर, स्वाभाविक और सहज है। प्रकृति की जीवन्तता मानी हुयी या कल्पित नहीं है, अनुभूत है। प्रकृति और मनुष्य में एकात्मकता है।

मार्क्स की धारणा में 'प्रकृति का मानवीकरण' आवश्यक है। यह केवल समकालीन उत्पत्ति की दृष्टि से ही आवश्यक नहीं है, वरन् यही एक सम्भव तरीका है, जिससे मनुष्य अपने चारों ओर की दुनिया से सम्बन्ध बनाता है। मनुष्य प्रकृति के प्रति आदर 'मनुष्य की आँख' और 'भावना' से प्रकट करता है। मनुष्य ही प्रकृति को आँकने और जानने का मानदण्ड है। मार्क्स की दृष्टि में नैतिकता की दृष्टि से क्या नैतिक तथा अनैतिक है, इस पर कहा गया है कि "किसी जीव को नष्ट न करना यदि इस पर निर्भर करता है कि प्रत्येक जीवित वस्तु को जीने की चाह है, तो यह अनैतिक है। इसकी जगह दृष्टिकोण यह होना चाहिए कि प्रकृति या किसी जीव का मनमाना विनाश करने से प्राकृतिक पर्यावरण में दरिद्रता की वृद्धि होगी और लोगों में निर्दयता की भावना की उत्पत्ति होगी। अतः प्रकृति का विनाश करना एक अनैतिक कार्य होगा।"

उपसंहार

अतः फ्रिटजॉफ कैप्रा का गहन पारिस्थितिकी का दर्शन पर्यावरण के साथ हमारे सम्बन्धों के पुनर्मूल्यांकन के लिए एक सम्मोहक रूपरेखा प्रस्तुत करता है। मानव केन्द्रित विचारों को चुनौती देकर और प्रकृति की समग्र समझ की वकालत करके, गहन पारिस्थितिकी चेतना में बदलाव को

प्रोत्साहित करती है, जो हमारे समय की गम्भीर पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के लिए आवश्यक है। दर्शन पर्यावरणीय नैतिकता को आकार देने और मनुष्यों और प्राकृतिक दुनिया के बीच अधिक टिकाऊ और सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व को बढ़ावा देने के लिए एक मूल्यावान आधार प्रदान करता है। फ्रिटजॉफ कैप्रा का गहन पारिस्थितिकी का दर्शन सभी जीवन रूपों के आन्तरिक मूल्य को पहचानकर, परस्पर जुड़ाव और स्थिरता के सिद्धान्तों को अपनाने की वकालत करता है। जिसके माध्यम से हम एक पारिस्थितिक चेतना विकसित कर सकते हैं जो व्यक्तिगत हितों से परे हैं और पृथ्वी के साथ सद्भाव को बढ़ावा देती है।

जैसा कि हम 21वीं सदी में अभूतपूर्व पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, गहन पारिस्थितिकी की अंतर्दृष्टि हमें जीवन के उस नाजुक जाल की रक्षा और सरंक्षण करने की हमारी साझा जिम्मेदारी की याद दिलाती है जिस पर हमारा अस्तित्व निर्भर करता है। गहन पारिस्थितिकी के सिद्धान्तों को अपनाकर, हम पृथ्वी पर सभी प्राणियों के लिए अधिक टिकाऊ और न्यायसंगत भविष्य की दिशा में एक रास्ता बना सकते हैं। गहन पारिस्थितिकी ने परिस्थितिक अर्थशास्त्र के विकास को सूचित किया है, जो पारिस्थितिक सिद्धान्तों के उनके मूल्यों को आर्थिक सिद्धान्त और व्यवहार में एकीकृत करना चाहता है। विज्ञान और मूल्य के विषय में यह प्रश्न उठता है कि गहन पारिस्थितिकी में विज्ञान का कितना उपयोग है और उसमें मूल्य कितना भागीदार है? साथ ही विज्ञान और मूल्य के विषय में यह विवाद है कि विज्ञान का मूल्यों से सम्बंध है। मूल्य विज्ञान के घेरे में नहीं आता है। कहा जाता है कि वैज्ञानिक क्रान्ति के दौरान, 17वीं शताब्दी में, मूल्यों को तथ्यों से अलग रखा गया और उसी समय से हमारा यह विश्वास बन गया कि वैज्ञानिक तथ्य, हम जो कुछ करते हैं, उससे स्वतन्त्र होते हैं। अतः वे हमारे मूल्यों से भी स्वतन्त्र होते हैं, परन्तु वास्तव में वैज्ञानिक तथ्यों का उद्भव मनुष्य है। एक शब्द में यदि कहें तो मनुष्य के जीवनादर्श से हुआ है, जिसे उनकों (तथ्यों को) अलग नहीं किया जा सकता। वैज्ञानिक खोज जीवनादर्श के बीच होते हैं, अतः उन खोजों को मूल्यों से स्वतन्त्र नहीं कह सकते हैं। अतः वैज्ञानिक अपनी खोजों के लिए न केवल बौद्धिक रूप में जिम्मेदार हैं, वरन् वे नैतिक दृष्टि से भी नैतिक मूल्यों की तलाश करते हैं। मूल्य और तथ्य को अलग-अलग रखने पर डहल ने आपत्ति करते हुए ठीक ही कहा है कि "हमारे लिए यह एक निरर्थक प्रयास होगा कि अपने तथ्यात्मक ज्ञान को हम एक मुहरबन्द डिब्बे में एक खाने में रखें और मूल्यों को दूसरे खाने में, जहाँ वास्तविकता से उसका किसी प्रकार का सम्बंध ही न रह जाए।" अतः वैज्ञानिक को वास्तविक जगत के साथ मूल्यों को रखना और पहचानना होगा, अर्थात् वैज्ञानिक को बौद्धिक और नैतिक रूप से वैज्ञानिक खोजों के लिए जिम्मेदार होना चाहिए और यही गहन पारिस्थितिकी की मांग भी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. योगवाशिष्ठ, 3/55/24
2. मनुस्मृति, 4/5.6
3. मत्स्य पुराण
4. डॉ० संगमलाल पाण्डेय, वेदान्तिक सोशल फिलॉसोफी, दर्शन पीठ, इलाहाबाद 1988.
5. ए०डी० उर्सुल-फिलॉसफी एण्ड दी इकोलाजिकल प्राब्लम्स ऑफ सिविलाइजेशन, प्रोग्रेस पब्लिशर्स, मास्को
6. डॉ० हृदयनारायण मिश्र "नीतिशास्त्र के प्रमुख सिद्धान्त", शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद, 2015.
7. अखंड ज्योति-अक्टूबर, 1997.
8. कैप्रा, 'दी वेब आफ लाइफ' पर उद्धृत, 1996.
9. इटरनेशनल एसोसिएशन ऑफ एनवायर्नमेटल फिलॉसफी, 2008.
10. चेशायर बुक्स, "द इकोलॉजी ऑफ फ्रीडम" बुकचिन 1982.
11. वेस्टन, "एन इनविटेशन टू एनवायर्नमेटल फिलॉसफी", आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयार्क, 1999.
12. बेलशॉ, क्रिस्टोफर, "पर्यावरण दर्शन चेशमः कुशाग्रता", 2001.
13. ड्रेगंसन, इनौए, "द डीप इकोलॉजी मूवमेंट "नार्थ अंटलाटिक बुक्स, बर्कले, कैलिफोर्निया, 1995.
14. विली-ब्लैकवेल, "पर्यावरण दर्शनः सिद्धांत से अभ्यास तक" सरकार, 2012.